Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 6, December-2022, ISSN 2230-7540

झारखंड की आदिवासी महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का अध्ययन

Ramkrishna Paul[1*], Dr. Anita Samal[2]

[1] Ph.d Student, Kalinga University Raipur.

[2] Ph.d Guide, Kalinga University Raipur.

सार - ***जनजातिय क्षेत्रों में औद्योगिकरण का विस्तार जिसके परिणाम रूवरूप परिवर्तन की दो तरह की ग्रक्रिया अर्थात बाहरी लोगों का जनजातीय क्षेत्र में आप्रवासन और जनजातीय लोगों का शहरी क्षेत्र में स्थानांतरण हुआ/ आजीविका की तलाश में हर साल शहरी और महानयरीय क्षेत्र में जनजातीय लोगों का एक समूह ग्रवेश करने लगा। ऐसी (स्पिट है कि समूहों में महिलाओं को खाड़ी देशों नेपाल और अन्य बाजारों में ठेकेदारों द्वारा ले जाया जाता है; जहां जाना घातक साबित होता है। इस ग्रकार प्रवास की दो तरह की ग्रक्रिया ने आगे चलकर आदिवासी महिलाओं की स्थिति को उनके पुरुष लोग की तुलना में अधिक गिरावट दी है। महिलाओं की समस्याएं काफ़ी हद तक आदिवासी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर भूमि अलयाव से जुड़ी हैं। इस अध्ययन में झारखंड की आदिवासी महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया है***

कीवर्ड - झारखंड, आदिवासी महिला, सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति

----------X----------

प्रस्तावना

एक आदिवासी महिला का समाज के सामाजिक--आर्थिक ढांचे में महत्वपूर्ण स्थान होता है। गैर-आदिवासी समाजों में, महिलाओं को बोझ के जानवर के रूप में नहीं माना जाता है वे अपने सामाजिक जीवन से संबंधित पहलुओं में अपेक्षाकृत स्वतंत्र और दृढ़ हाथ का प्रयोग करती हैं। यद्यपि आदिवासी महिलाएं राष्ट्रीय जीवन की मुख्य धारा से दूर हैं, फिर भी उन्हें आम तौर पर पड़ोस या समाज को प्रभावित करने वाले सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों के प्रभाव से दूर नहीं रखा जाता है।

परिवर्तन की प्रक्रिया में, आदिवासी महिला चाहे वह इसे पसंद करे या नहीं, कुछ मानदंडों को अपनाने के लिए मजबूर है, जो उसकी स्वतंत्रता को भी छीन सकती है, परिवार के पास जो भी आदिम उत्पादन कारक हैं, उत्पादन पर उसका नियंत्रण, उसका घर, परिवार और बच्चे और यहाँ तक कि उसका अपना जीवन भी। इस तरह के आरोप की प्रक्रिया का असर आदिवासी महिला पर पड़ता है. आदिवासी महिला का जीवन उसके पुरुष साथी से जुड़ा होता है। पूरे भारत में जनजातीय समुदाय विभिन्न प्रकार के अभावों के अधीन रहा है जैसे भूमि और अन्य वन संसाधनों से अलगाव। ब्रिटिश शासन के बाद से, जो भारत के स्वतंत्रता प्राप्त करने के साथ समाप्त नहीं हुआ, आदिवासी समाज के अलावा, उसे अपने बच्चों और अपने समुदाय की खातिर पीड़ित होना पड़ता है और फिर भी जीवित रहना पड़ता है।

सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका

अध्ययन क्षेत्र में आदिवासी महिलाओं की भूमिका न केवल आर्थिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण है, बल्कि गैर-आर्थिक गतिविधियों में उनकी भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। परिवार चूल्हा और घर का निर्माण और निरंतरता महिलाओं का अधिकार क्षेत्र है। पत्नियों, माताओं और आयोजकों के रूप में महिलाओं की भूमिका और सामाजिक जीवन के अन्य आयामों की बुनियादी नींव के रूप में अत्यधिक महत्व है। गद्दी के बीच, चूंकि पुरुष देहाती कर्तव्यों के लिए बाहर हैं, कम से कम जीवन के प्रारंभिक वर्षों में बच्चों का समाजीकरण स्वतः ही माँ का व्यवसाय बन जाता है। गद्दी परिवार बच्चों के साथ मातृ-केंद्रितता और महिलाओं के हस्तक्षेप के क्षेत्र में आने वाले

www.ignited.in

कुछ महत्वपूर्ण निर्णयों को मानता है। प्रसव, अंत्येष्टि और मेलों और त्योहारों में महिलाओं की भूमिका ग्रामीण जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

आदिवासी क्षेत्रों में लिखित अभिलेखों के अभाव में महिलाएं पारंपरिक सूचनाओं की वाहक होती हैं। वे इस तरह के ज्ञान के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण अभिनेता हैं। वे न केवल सक्षम खाद्य उत्पादक और गृह निर्माता हैं बल्कि समृद्ध स्थानीय मौखिक परंपराओं के ट्रांसमीटर भी हैं जनजातीय महिलाएं, किसी भी अन्य सामाजिक समूह की तरह, कुल आबादी का लगभग आधा हिस्सा हैं। आदिवासी महिलाएं, सभी सामाजिक समूहों में महिलाओं के रूप में, पुरुषों की तुलना में अधिक निरक्षर हैं।

अन्य सामाजिक समूहों की तरह, आदिवासी महिलाएं प्रजनन स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं को साझा करती हैं। जब प्राथमिक और माध्यमिक निर्वाह गतिविधियों की गणना की जाती है, तो महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक काम करती हैं। विभिन्न समाजों में महिलाओं की स्थिति भिन्न-भिन्न होती है। महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण करने के लिए वैचारिक ढांचे में सात भूमिकाएँ शामिल हैं जो महिलाएं जीवन और कार्य में निभाती हैंरू -माता-पिता, वैवाहिक, घरेलू, रिश्तेदार, व्यावसायिक, समुदाय और एक व्यक्ति के रूप में। इन विविध पारिस्थितिक क्षेत्रों में महिलाओं की सामाजिक स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए, निष्कर्षों को बाद की श्रेणियों में विभाजित किया गया है - (ए) एक लड़की; बेटी; एक अविवाहित महिला; (बी) एक विवाहित महिला; (सी) एक विधवा; (डी) तलाकशुदा; और (ई) एक बांझ महिला।

महिलाओं की भूमिका न केवल आर्थिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण है, बल्कि गैर-आर्थिक गतिविधियों में उनकी भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। आदिवासी महिलाएं बहुत मेहनत करती हैं, कुछ मामलों में तो पुरुषों से भी ज्यादा। अध्ययन क्षेत्र में सभी आदिवासी समाज पितृसत्तात्मक हैं जिनमें सार्वजनिक क्षेत्र में पुरुषों का वर्चस्व है। हालाँकि, अपनी दुनिया में महिलाओं को स्वतंत्रता और आत्म-अभिव्यक्ति है। विकास कार्यक्रमों की शुरुआत के साथ आर्थिक परिवर्तन हो रहे हैं लेकिन आदिवासी महिलाएं अपने पहनावे, भाषा, औजारों और संसाधनों में पारंपरिक बनी हुई हैं, क्योंकि वे नकदी फसलों के बजाय खाद्य फसलें उगाती हैं। आधुनिकीकरण परिवर्तन ला रहा है, जो पुरुषों और महिलाओं को अलग तरह से प्रभावित करता है।

समग्र रूप से भारत में तीव्र लैंगिक असमानताएं पाई जाती हैं, हालांकि महिलाओं की स्थिति क्षेत्र के अनुसार काफी भिन्न होती है। आर्थिक, शैक्षिक, वैज्ञानिक, कानूनी, राजनीतिक, आधिकारिक, राजनीतिक और धार्मिक क्षेत्र में मानव सामाजिक गतिविधियों की लगभग सभी सीमाओं पर भारतीय महिलाओं को गहरा नुकसान होता है। हमेशा के लिए सामाजिक-सांस्कृतिक कारक हैं, जो विशेष समाज में महिलाओं की स्थिति के लिए मान्य हैं।

साहित्य समीक्षा

आंद्रे बेटिले (1999) द्वारा प्रस्तावित समातशास्त्रीय विश्लेषण का उपयोग करते हुए भारत समतावादी राजनीतिक व्यवस्था का विरोधाभाषी मामला है और एक पदानक्रमित सामाजिक संरचना है। इस प्रकार परंपराओं और सांस्कृतिक मानदंडों में निहित आर्थिक और सामाजिक असमानताओं को बदलने की जरूरत है क्योंकि राजनीति उपाय अकेले सशक्तिकरण नहीं ला सकते हैं। वह बताते हैं कि सशक्तिकरण आर्थिक कमजोरी और असुरक्षा, विशेष रूप से हाशिए. असंगठित और अन्य वंचित समूहों के संदर्भ में किया जाता है।

नीता लोधा (2003) ने अपना अध्ययन राजस्थान के आदिवासी स्त्रियों की स्थिति पर कार्य सहभागिता और निर्णय लेने सबंधी भूमिकाओं के विशेष संदों में किया है । इन्होनें अपने अध्ययन के लिये एक पिछड़े और एक उन्नत गाँव को चुना है। आगे अपने अध्ययन में इन्होंने बताया है कि स्त्रियों की स्थिति एवं भूमिका अनेक संदों के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं जिसमें सामाजिक-सांस्कृतिक कारक, आर्थिक और सामाजिक विकास की प्रगति, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और आधुनिकता इन सबका प्रभाव पड़ता है | इस अध्ययन में अनेक माध्यमिक प्रश्नों को उठाया है, कि कैसे ये सभी कारक, राजस्थान की स्त्रियों के विविध कार्य संपन्नता और उनमें उनकी सहभागिता, और उनले निर्णय लेने की क्षमता पर प्रभाव डालते हैं | इनका यह अध्ययन आदिवासी स्त्रियों और वर्तनान में उनकी स्थिति एवं भूमिका विषयक चिंतन संबंधी बहुत से आधारभूत बिन्दुओं के स्पष्टीकरण में सहायक है।

भारती पडा एवं सागरिका मोहती (2003) ने अपने अध्ययन में बताया कि एक दशक से अधिक समय से सशक्तिकरण शब्द महिलाओं के साथ जुड़ा हुआ है । सशक्तिकरण शब्द में ही विश्वशक्ति निहिर है । प्रत्येक समाज में शक्तिशाली व शक्तिहीन समूह होते है |

www.ignited.in

इसलिए भारतीय समाज में भी भिन्न-भिन्न प्रकार की महिलाएं है । अधिकांश महिलाएँ शिक्षा, रोजगार एवं अपने अधिकारों की जानकारी से रचित है ! जो महिलाओं की दुर्दशा को दर्शाता है | सशक्तिकरण के क्षेत्र में स्वसहायता समूह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है | इसके कारण नहिलाएँ जागरूक हो रही है।

एस.के. बासु (1993) ने अपने अध्ययन में आदिवासी स्त्रियों के स्वास्थ्य स्तर को समझाया है इन्होने इसे निम्न संदर्भो में लिया है - लिंगानुपात, विवाह की उम्र, जन्म, व मृत्युदर, जीधन की औसत आयु पोषण स्तर, मों व बच्चे की स्वास्थ्य देखभाल व परिवार कल्याण कार्यक्रम | अपने अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में इन्होंने पाया कि आदिवासियों में शिशु मृत्यु दर अधिक है व उनका पोषण स्तर निम्न है।

डॉ. सुरेन्द्रनाथ बेहरा एवं श्रीमति रंजीता कुमारी मोहंती (2000) ने अपने अध्ययन थ्वतबमज 'मदक स्पअमसपीववक वित ज्पइंस मतदमते में बताया कि उडीसा की जनजातियों में सथाल, कोन्हा, जुआग, गुईया. भूमिज, मथुडी खरिया, संयडिया आदि प्रमुख जनजातियों जीविका निर्वाह हेतु बनों पर निर्भर है | ये जनजातीय महिलाएँ वन्य पदार्थों जैसे, हर्रा, आँवला, बहेडा इत्यादि को बेचने क्षेत्रीय बाजार में जाती है | पी-कभी ये इन पदार्थों को दलालों को बेच देती है | ये दलाल इन्हें बहुदा कम मूल्य में खरीदते है व बाजार में कम दामों में बेचते है। परंतु आजकल स्वसहायता समूहों के गठन द्वारा महिलाओं में इन बनोत्पादों के क्रय विक्रय के संबंध में धोसी जागरूकता आई है।

हवे डॉ. एस.एन. त्रिपाठी (2000) ने अपने आसयन म्अंसंजपदह वतनउेमर्सा-भ्मसच ब्यतवनच उमदवद ब्वतपदमी में कैद निदर्शन प्रणाली का प्रयोग सा का प्रयोग करते हुए 50 महिला स्वसहायता समूह का चयन अध्ययन हेतु किया है । जिसमें कंधमाल, काला पताल, कालाहासी एवं रायगढ़ा जिले के 20-20 स्वसहायता समूहों को शामिल है । प्रत्येक समूह से ऐसे दो सदस्यों का चयन किया गया जिन्होंने अधिक मात्रामीण लिया था व बचत किया था | 60 स्थरम्हायता समूह में से 345566 प्रतिशत) सडक कमाई 504 रु. से 4004 रु. तक थी तथा 8 (3.33 प्रतिशत) स्वसहायता समूहों की मासिक आय 504 रु. से कम थी | अधिकतम 28 (46.57 प्रतिशत) स्वाहायता समूह आर्थिक लाभ हेतु बनाए गए थे. जबकि न्यूनतम 6(4000 प्रतिशत) स्वसहायता समूह ऋण भार से मुविस के कारण बनाए गए थे 25(0.06 प्रतिशत) महिलाएँ प्रतिमाह 64-34 रु. तक चत करसी थे | 8(333 प्रतिशत) महिनाएँ 34 रु. से अधिक मासिक परदा करते थे |

डॉ. मनोरमा सैनी एवं डॉ. अल्पना सैनी (2006) ने अपने अध्ययन मउमदरे म्उचवूमतउमदज डपसमे जव हव मे सशक्तिरग के अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयास किया है | पहिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परंतु उसके योगदानों को महत्व नही दिया जाता है। महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण का क्षेत्र शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण एवं वातावरण इत्यादि में निहित है। महिलाओं की सहायक सेवाएँ जैसे बच्चों की देखभाल, गृहकार्य इत्यादि में पुरुष के योगदान की आवश्यकता है। हालाकि महिलाओं के लिए चलाए जा रहे विकास कार्यक्रम अच्छा परिणाम हे है परंतु आज भी सशक्तिकरण जैसे मुद्दे को मीलो दूर जाना है।

उद्देश्य

आदिवासी महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का अध्ययन

अध्ययन क्षेत्र

धालभूमगढ़ प्रखण्ड की रुप रेखा भारत देश के झारखण्ड राज्य में पूर्वी सिंहमम नाम के एक जिला है। इस जिले में । प्रखण्ड है। इन्ही प्रखण्डों में से धालभूमगढ़ एक प्रखण्ड है जिसका मुख्यालय धालभूमगढ़ शहर है। धालभूमगढ़ राज घराने का अपना गौरवशाली इतिहास रहा है। इसकी नींब 4700 ई० में राजस्थान के धोलपुर से आए राजा जगनाथ धल ने रखी थी। राजवंश के संस्थापक राजा जगनाथ धल के नेतृत्व में ही अंग्रेजो के खिलाफ सन् 4765 में धल विद्रोह हुआ था। इस प्रखण्ड का क्षेत्रफल 479 ॥उ (तर्ग कि०मी०) है तथा 2044 के जनगणनुसार इसकी जनसंख्या 64.932 है। यह जिला मुख्यालय जमशेदपुर से पूर्व की ओर 59 कि०मी० ओर राज्य की राजधानी रॉची से 485 कि०मी० पश्चिम की ओर स्थित है।

आंकड़ों का विश्लेषण

प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक, प्रश्नावली 'पर्यवेक्षण आत्मक आदि पद्धतियों को प्रयोग में लाकर आंकड़ों का विश्लेषण का प्रस्तावित शोध प्रबंध से संबधिक एवं व्यवहारिक पहलू तैयार किया जाएगा इसद्य शोध प्रबंध का व्यावहारिक पहलू अत्यधिक महत्वपूर्ण होगा द्या हम आदिवासी

www.ignited.in

महिलाओं से अधिक से अधिक संपर्क करने की कोशिश करेंगे जो एक निर्णायक और सार्थक व्याख्या प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। इसके साथ ही उन पक्षों को भी उजागर करने का प्रयास किया

परिणाम

उम्र के अनुसार उत्तरदाता

भारतीय परिदृश्य में एक व्यक्ति की उम्र विशेष रूप से एक बालिका के लिए उसकी सीमाओं, विशेषाधिकारों और परिवार और समाज में स्थिति को परिभाषित करती है। उसकी भलाई इस बात पर निर्भर करती है कि उसके साथ सही उम्र में चीजें होती हैं या नहीं। कई समाजों में एक निश्चित उम्र के बाद बिना शादी के लड़की को घर पर रखना वर्जित है। आज भी जहां महिलाओं को शादी करने या अविवाहित रहने की पसंद की अधिक स्वतंत्रता है, अविवाहित महिला को अभी भी ज्यादा सम्मान की नजर से नहीं देखा जाता है। इस बात को लेकर हमेशा अटकलें लगाई जाती हैं कि किसी महिला या लड़की ने अभी तक शादी क्यों नहीं की है। महिला कई बार अपनी उम्र के कारण शिक्षा या करियर बनाने में प्रतिबंधित हो जाती है; क्योंकि वह विवाह योग्य आयु की हो गई है। शादी के बाद भी, कई महिलाएं बच्चे पैदा करने और परिवार की देखभाल करने के लिए बोझ बन जाती हैं, जैसे कि उन्हें अपने परिवार की भलाई की वेदी पर शिक्षा प्राप्त करने या करियर महिला बनने की अपनी इच्छाओं का त्याग करना पड़ता है। तालिका 1 आयु के अनुसार दोनों गांवों के उत्तरदाताओं के वितरण को दर्शाता है।

तालिका 1. उम्र के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण

Age	धालभूमगढ़		अरकोसा		कुल	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
20 से नीचे	6	2.88	2	1.52	8	2.35
21-28	40	19.23	41	31.06	81	23.82
29-36	52	25.00	45	34.09	97	28.53
37-44	48	23.08	25	18.94	73	21.47
45 या उससे अधिक	62	29.81	19	14.39	81	23.82
कुल	208	100	132	100	340	100

वैवाहिक स्थिति के अनुसार उत्तरदाता

विवाह एक हद तक महिलाओं के सशक्तिकरण को प्रभावित करता है, विशेष रूप से भारत जैसे देश में जहां संस्कृति व्यक्ति के जीवन के हर महत्वपूर्ण पहलू पर हावी है। जिस परिवार और समाज में महिला या लड़की की शादी हुई है, उसके आधार पर सशक्तिकरण को या तो प्रोत्साहित किया जाता है या कमजोर किया जाता है। कई परिवारों में महिलाएं प्रमुख निर्णय निर्माता बन जाती हैं, हालांकि, परिवार में वरिष्ठ पुरुष सदस्य ही अंततः अंतिम निर्णय लेते हैं। अविवाहितों की तुलना में मेरे उत्तरदाताओं में मुख्य रूप से विवाहित महिलाएँ शामिल हैं, जिनकी संख्या कम है, और विधवाएँ और तलाकशुदा बहुत कम हैं। चूंकि मेरे अधिकांश उत्तरदाताओं में विवाहित महिलाएं शामिल थीं, इसलिए मैं विश्लेषण करने और यह पता लगाने में सक्षम था कि विवाह ने उनके सशक्तिकरण को कैसे प्रभावित किया है।

तालिका 2 वैवाहिक स्थिति के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण

वैवाहिक स्थिति	धालभूमगढ़		अरकोसा		कुल	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति
तलाकशुदा	5	2.40	2	1.52	7	2.06
विवाहित	162	77.88	75	56.82	237	69.71
एकल	37	17.79	48	36.36	85	25.00
विधवा	4	1.92	6	4.55	10	2.94
अलग किए	0	0.00	1	0.76	1	0.29
कुल	208	100	132	100	340	100

शैक्षिक योग्यता के अनुसार उत्तरदाता

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण और शक्तिशाली साधन है, जो अंततः किसी दिए गए समाज में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा हमेशा से ज्ञान, प्रभुत्त और शक्ति का स्रोत रही है। ब्रह्मांड में मानव जाति की भलाई के लिए इसका कार्यात्मक महत्व है। हालांकि शिक्षा की भूमिका को लेकर विवाद हैं। फिर भी सबसे पिछड़े समुदायों में भी शिक्षा का विस्तार थमने का नाम नहीं ले रहा है। आदिवासी और पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कुछ विशेष प्रावधान भी किए गए हैं।

भारत के राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में सामान्य रूप से समाज के सभी वर्गों और विशेष रूप से अनुसूचित जनजातियों, अनुसूचित जातियों और अन्य पिछड़े वर्गों

www.ignited.in

सहित कमजोर वर्गों को शिक्षा प्रदान करने के लिए कुछ संवैधानिक दायित्व हैं। इसी उद्देश्य के लिए प्रत्येक वित्तीय वर्ष में प्रत्येक राज्य और केंद्र शासित प्रदेश में बजट का एक निश्चित प्रावधान है। पश्चिमी यूरोप के उन्नत देशों में भी, शिक्षा मुख्य रूप से राज्य द्वारा समर्थित और वित्त पोषित है।

एमिल दुर्खीम शिक्षा को उसके मूल और उसके कार्यों में एक प्रमुख सामाजिक चीज मानते हैं। वह शिक्षा को समाज की संरचना से घनिष्ठ रूप से संबंधित मानता है। दुर्खीम के लिए शशिक्षा समाज को प्रतिबिम्बित करती है और उसका पालन-पोषण करती है और वह इसे केवल आंशिक रूप से ही बदल सकती हैश।

यह माना जाता है कि शिक्षा ही एकमात्र ऐसा साधन है जिसके द्वारा सभी प्रकार की विकास प्रक्रियाओं को क्रियान्वित किया जा सकता है और इसके सार्थक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। यह केवल शिक्षा है जो लोगों को उनके अधिकारों, स्वतंत्रता, हितों, कर्तव्यों और व्यवहार के बारे में जागरूक करती है।

स्वतंत्रता पूर्व भारत में, ब्रिटिश शिक्षा नीति विशिष्ट, सीमित और लोगों के एक निश्चित समूह तक फैली हुई थी। भारत में ब्रिटिश शिक्षा नीति का एकमात्र उद्देश्य क्लर्कों के लिए प्रजनन स्थल तैयार करना था। स्वतंत्र भारत की सरकार ने विभिन्न शैक्षिक नीतियां बनाईं और नए विचारों को शामिल किया जब और जहां ऐसा महसूस किया गया। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए पिछड़े आदिवासी क्षेत्रों तक शैक्षिक सुविधाओं का विस्तार किया गया और आदिवासी लोगों के साथ-साथ पूरे भारतीय समाज को प्रेरित किया गया। निस्संदेह भारत के लोगों और विशेष रूप से जनजातीय लोगों के बीच साक्षरता प्रतिशत में जबरदस्त प्रगति हुई है। निम्नलिखित तालिका में उपलब्ध आंकड़े भारत में सामान्य जनता और अनुसूचित जनजातियों की साक्षरता प्रतिशत की वास्तविक तस्वीर प्रदर्शित करते हैं।

तालिका 3 शैक्षिक योग्यता के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण

वर्ष	सामान्य साक्षरता %	अनुसूचित जनजाति साक्षरता:
1901	5.35	एनए (उपलब्ध नहीं)
1911	5.92	NA
1921	7.16	NA
1931	9.50	0.75
1941	16.10	NA
1951	16.67	NA
1961	24.02	8.54
1971	29.45	11.29
1981	43.23	16.35
1991	52.21	29.60
2001	64.8	47.10
2011	74.04	58.95

व्यावसायिक स्थिति के अनुसार उत्तरदाता

बढ़ते शहरीकरण और औद्योगीकरण के साथ भारतीय समाज जाति उन्मुख से वर्गोन्मुखी हो गया है। अधिकांश शहरी क्षेत्रों को वर्ग के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। हालाँकि, भारत के ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में परिदृश्य अलग है, जहाँ औद्योगीकरण आसनन्न नहीं है; वे अभी भी कुटीर उद्योगों या पारिवारिक व्यवसाय तक ही सीमित हैं (हम इसे वंशानुगत व्यवसाय भी कह सकते हैं)। अधिकांश उत्तर-पूर्वी राज्यों में कोई बड़ा औद्योगिक प्रतिष्ठान नहीं है। इसके पीछे का कारण भौगोलिक बाधाओं और यहां तक कि गरीबी भी है; प्रचलित अर्थव्यवस्था ज्यादातर निर्वाह अर्थव्यवस्था है। अधिकांश लोग स्वयं को कुटीर उद्योगों जैसे पशुपालन, प्राथमिक स्तर पर कृषि, बुनाई, टोकरी आदि में संलग्न करते हैं। अखिल भारतीय स्तर पर जनजातीय कामगारों का भारी बहुमत प्राथमिक गतिविधियों में लगा हुआ है। माध्यमिक और तृतीयक गतिविधियों पर उनकी निर्भरता केवल मामूली है। आदिवासी कार्यबल की क्षेत्रीय संरचना काश्तकारों के स्तर पर देखी जा सकती है। झारखंड में कृषि मजदूर, घरेलू उद्योग के श्रमिक और अन्य श्रमिक और ये सभी श्रेणियां अनुसूचित जनजाति के मुख्य श्रमिकों के अंतर्गत आती हैं।

तालिका 4 व्यवसाय के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण

www.ignited.in

व्यावसायिक स्थिति	धालभूमगढ़		अरकोसा		कुल	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति
दैनिक दांव	95	45.67	78	59.09	173	50.88
किसान	44	21.15	32	24.24	76	22.35
कुशल श्रम	32	15.38	9	6.82	41	12.06
सेवा धारक	9	4.33	3	2.27	12	3.53
व्यापार धारक	8	3.85	2	1.52	10	2.94
छोटा दुकानदार	7	3.37	4	3.03	11	3.24
पेशेवर	4	1.92	1	0.76	5	1.47
बेरोज़गार	9	4.33	3	2.27	12	3.53
कुल	208	100	132	100	340	100

परिवार के आकार के अनुसार उत्तरदाता

परिवार का आकार आम तौर पर व्यक्ति या परिवार के व्यवसाय के प्रकार पर निर्भर करता है। ज्यादातर आदिवासी समुदायों के भीतर, जहां कुटीर उद्योग प्रचलित हैं जो कमोबेश पारिवारिक व्यवसाय की तरह हैं, काम करने के लिए अधिक हाथों की आवश्यकता होती है, इसलिए परिवार के सदस्यों की संख्या अधिक होती है, जबकि सरकारी क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों के मामले में, एनजीओ क्षेत्रों या निजी क्षेत्रों में, एकल प्रकार के परिवार की स्थापना का विकल्प चुनते हैं। कुछ समुदाय, संयुक्त परिवार प्रणाली या विस्तारित परिवार व्यवस्था का प्रदर्शन करते हैं। अत: ऐसे परिवारों में परिवार के सदस्यों की संख्या सदैव अधिक होती है। एक पारंपरिक अवधारणा है कि परिवार जितना बड़ा होगा, आर्थिक स्थिति उतनी ही अधिक होगी। यह भी देखा गया है कि बच्चों की अच्छी देखभाल की जाती है और वृद्धों को सम्मान और सुरक्षा दी जाती है। इसलिए एक बच्चे के समाजीकरण या वरिष्ठ नागरिकों की देखभाल को देखते हुए परिवार का बड़ा आकार आम तौर पर अधिक फायदेमंद होता है। हालाँकि, पिछले कुछ दशकों से, यह देखा गया है कि संयुक्त परिवार की स्थापना धीरे-धीरे पतित होती जा रही है और एकल प्रकार के परिवार की स्थापना का मार्ग प्रशस्त कर रही है। परिवार के सदस्यों की संख्या के बारे में जानकारी एकत्र की जाती है और तालिका 5 में दी जाती है

तालिका 5 संख्या के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण परिवार के सदस्यों की।

परिवार के सदस्यों की संख्या	धालभूमगढ़		अरकोसा		कुल	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति
1-3	26	12.50	12	9.09	38	11.18
4-5	36	17.31	35	26.52	71	20.88
6-7	68	32.69	37	28.03	105	30.88
8-9	31	14.90	27	20.45	58	17.06
10+	47	22.60	21	15.91	68	20.00
कुल	208	100	132	100	340	100

परिवार के प्रकार के अनुसार उत्तरदाता

भारतीय समाज में दो मुख्य प्रकार की पारिवारिक प्रणालियाँ देखी जाती हैं, अर्थात् एकल परिवार और विस्तारित या संयुक्त परिवार। परिवार का प्रकार परिवार के सदस्यों की कुल संख्या और परिवार के व्यवसाय से संबंधित होता है। जैसा कि पहले चर्चा की गई है, परिवार के सदस्यों की कुल संख्या के साथ-साथ आदिवासी और गैर-आदिवासी समुदाय के व्यवसाय में भिन्नता है। गैर-आदिवासी समुदाय ज्यादातर संयुक्त परिवार की व्यवस्था को दर्शाते हैं जबकि गैर-आदिवासी समुदाय पूरी तरह से संयुक्त परिवार प्रकार नहीं होते हैं।

तालिका 6 परिवार के प्रकार के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण

परिवार का प्रकार	धालभूमगढ़		अरकोसा		कुल	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति
संयुक्त	138	66.35	59	44.70	197	57.94
नाभिकीय	70	33.65	73	55.30	143	42.06
कुल	208	100	132	100	340	100

घरेलू मुखिया द्वारा उत्तरदाता

तालिका 7 प्रतिवादी के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण घर का मुखिया है या नहीं

घर का मुखिया	धालभूमगढ़		अरकोसा		कुल	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति
पुरुष	195	93.75	124	93.94	319	93.82
महिला	13	6.25	8	6.06	21	6.18
कुल	208	100	132	100	340	100

www.ignited.in

उपसंहार

धालभूमगढ़ के बैगाओं को दो श्रेणियों में बांटा गया है, एक वर्ग मुख्यधारा से आगे बढ़ रहा है और दूसरी श्रेणी मुख्यधारा से दूर है और परंपराओं के प्रति उनका झुकाव भी कम हो गया है. बैगा की सात उप-जनजातियां हैं। समाज में उनका स्थान निम्नतम है। गोंड पहले ज्यादातर वनवासी थे लेकिन वर्तमान में बसे हुए कृषक हैं और इसलिए उन्हें किसान (किसान) भी कहा जाता है। उनका मुख्य भोजन बाजरा और उबले चावल का दलिया है। गोंड आदिवासी अंतर्विवाह और कबीले बहिर्विवाह का पालन करते हैं। जिले की कुल साक्षरता दर 59.64: है जिसमें से महिला साक्षरता दर 45.5: और पुरुष साक्षरता दर 73.7: है। एसटी में साक्षरता दर 50.7: और एससी में 76.2: है। एसटी के बीच महिला साक्षरता दर बहुत कम (35:) है, यह दर्शाता है कि एसटी समुदाय में महिलाएं निचले स्तर पर हैं और अपने अधिकारों से अनजान हैं। मंडला में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएं बहुत अपर्याप्त हैं। जिले में पूर्ण टीकाकरण एवं परिवार नियोजन पर विशेष बल दिया जा रहा है। जिले में शिशु मृत्यु दर अधिक है। बुनियादी सुविधाओं की कमी, गरीबी आदि के कारण महिलाओं को उन्हें प्रदान की जाने वाली चिकित्सा सुविधाओं तक पहुंचने में समस्या का सामना करना पड़ता है।

संदर्भ

चौधरी, एस.के. और पटनायक, एस.एम. 2008. ष्डंडियन ट्राइब्स एंड द मेनस्ट्रीम९ जयपुररू रावत प्रकाशन।

दाश, जे. एंड पाटी, आर.एन. (2002)। स्वदेशी और आदिवासी लोग आजरू संकल्पना जारी करते हैं। में आर.एन. पति और जे. दाश (सं.), भारत के जनजातीय और स्वदेशी लोगरू समस्याएं और संभावनाएं (पीपी 3-44)। नई दिलीरू ए.पी.एच. प्रकाशन निगम।

चाको, पी.एम. (सं.). 2005. ष्जनजातीय समुदाय और सामाजिक परिवर्तन५ नई दिल्लीरू सेज प्रकाशन।

बानो, जेड 2004. जनजातीय महिला सशक्तिकरण और लिंग मुद्दे। नई दिल्लीरू कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स |

सुबोध ग्रंथ माला पुस्तक पथ, रांची-834004,2009. 6.डॉ० यादव, वीरेन्द्र सिंह-७ नई सहस्राब्दी का महिला सशक्तिकरण५ (अवधारणा, चिन्तन एवं सरोकार) भाग-2 ओमेगा

डॉ. मनोरमा सैनी एवं डॉ. अल्पना सैनी (2006), स्वयं सहायता समूह का प्रशिक्षण- ए गाइडबुक, महिला एवं बाल कल्याण विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, | पृष्ठ 8

हवे डॉ. एस.एन. त्रिपाठी (2000) महिला सशक्तिकरण के माध्यम से लिंग समानतारू रणनीतियाँ और दृष्टिकोण | लखनऊ, भारत बुक सेंटर, 2004

डॉ. सुरेन्द्रनाथ बेहरा एवं श्रीमति रंजीता कुमारी मोहंती (2000) के. भारत में महिलाओं का सशक्तिकरण, मानक प्रकाशन प्रा। लिमिटेड, नई दिल्ली, |

एस.के. बासु (1993) टुवर्ड्स एम्पावरिंग इंडियन वूमेनरू मैपिंग स्पेसिफिक ऑफ टास्क्स इन क्रिशियल सेक्टर्स /द्वारा संपादित... नई दिल्ली, सीरियल्स पब.,

भारती पडा एवं सागरिका मोहती (2003) ,2045. 5.डॉवर्मा, उमेशकुमार-७ झारखंड का जनजातीय समाज५६

नीता लोधा (2003) दक्षिण एशिया में महिलाओं का सशक्तिकरणरू अवधारणाएं और व्यवहार, नई दिल्ली, एफएओ-एफएफएचसी » एडी, पी. 7.

आंद्रे बेटिले (4999). षएनकाउंटर एंड एक्सपीरियंसरू पर्सनलअकाउंदट्स ऑफ फील्डवर्क दिललीरू विकास पब्लिशिंग हाउस ।

Corresponding Author

Ramkrishna Paul*

Ph.d Student, Kalinga University, Raipur

www.ignited.in